>

Title: Regarding wildfires in Uttarakhand.

एडवोकेट अजय भट्ट (नैनीताल-ऊधमसिंह नगर): प्रति वर्ष ग्रीष्म काल में उत्तराखण्ड के पहाड़ी इलाकों में भीष्ण गर्मी के कारण आग लगने की घटनायें घटित होती रहते हैं । जिसके कारण प्रतिवर्ष करोड़ों की प्राकृतिक सम्पदा नष्ट हो जाती है । इस भयंकर आग की चपेट में कई जंगली जानवर, मवेशी, पक्षियों की जान भी चली जाती है । जिसके कारण उत्तराखण्ड के पहाड़ी जंगलों से कई जीव जंतु, जानवर धीरे-धीरे विलुप्त होते जा रहे हैं । पूरे भारत में सरकारी आंकड़ों के आधार पर अध्ययन करें तो पिछले 16 वर्षों में जंगल में आग लगने की संख्या में 46 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि देखी गई है । केवल पिछले दो वर्षों में जंगल में आग लगने घटनाओं में 125 प्रतिशत की वृद्धि हुई है ।

इन घटनाओं में उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, और मध्य प्रदेश के जंगलों में आग लगने की सबसे अधिक घटनाएं हुई हैं । साथ ही उत्तराखंड एक बहुत ही संवेदनशील और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण राज्य है । यह दो अन्तराष्ट्रीय सीमाओं से घिरा हुआ है । पूर्व में नेपाल और उत्तर में चीन-अधिकृत तिब्बत है ।

इन घटनाओं को रोकने के लिए सरकार को कोई ठोस कार्यवाही करनी चाहिए । साथ ही जंगल में आग को रोकने और नियंत्रित करने के लिए एक राष्ट्रीय नीति विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए । सभी राज्य सरकारों से जंगलों में आग की रोकथाम और नियंत्रण के लिए अग्नि प्रबंधन योजना तैयार करने और लागू करने की दिशा में कहा जाना चाहिए ।